प्रथम अध्याय

जैनेंद्रका जीवन और व्यक्तित्व

प्रथम अध्याय

जैनेंद्रका जीवन और व्यक्तित्व

हिंदी साहित्यके लब्धप्रतिष्ठित मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार जैनेंद्रकुमार हैं. साहित्यिक और विचारक के रूपमें भी इनका स्थान मान्य हैं. प्रेमचंद्र संस्थानसे अलग अलग हटकर हिंदीमें मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक और विद्रोही साहित्यकारके रूपमें लिखने की प्रवृत्ती जैनेंद्रजीने निर्माण कीं. आश्रमकी दैनिक जीवन परंपराने उन्हें भौतिक जगतसे ऊपर उठकर कुछ बल देनेका प्रयास किया. गुरुदेव ठाकुर, उपन्यास सम्राट प्रेमचंद, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, महाकवि जयशंकर प्रसाद, महामना नेहरूजी, महात्मा गांधी आदि महापुरुषोंके व्यक्तित्वोंका समुचित असर आपकी जीवन प्रणालीमें देखा जा सकता हैं.

१) बचपन :-

जैनेंद्रका जन्म उत्तरप्रदेशके अलीगढ जिलेके कौडियागंजमें २ जनवरी १९०५ में हुआ. उनका मूल नाम आनंदीलाल लेकिन यह अधिक समयतक नहीं रहा. जन्मके छः वर्ष पश्चात् मामा महात्मा भगवानदीनके आश्रममें प्रविष्ट होनेपर उनका नाम "जैनेंद्रकुमार" में परिवर्तीत हुआ. सन् १९०७ में पिताजीकी मृत्यु हुयी. तबसे जैनेंद्रकुमार पंद्रह वर्षतक मामाके पास रहें. माताजी श्रीमती रामदेवीबाई बहुतही उद्यमी और गृहकार्य कुशल गृहिणी थी. उनकी दो बहनें थी.

२) विवाह तथा परिवार :-

बचपनसेही जैनेंद्रकुमार कुशाग्र बुध्दि और चिंतनशील थे. माता और मामाके विचारोंने इनके संस्कारोंको सर्वाधिक प्रबल बनानेके प्रयास किये.

सन १९३२ में भगवतीदेवीके साथ आपका विवाह हुआ, विवाह राष्ट्रीय भावनासे हुआ. केवल १७५० रुपये खर्च हुये. नये कपडे भी नहीं बनाये. भगवती देवी अशिक्षित थी. "श्रीमती भगवतीदेवी यदि मामूली भी पढी-लिखी नहीं थी तो यह उनके भाग्यकी दृष्टिसे वरदान ही सिध्द हुआ है. उनकी जैसी सब परिस्थितियोंमें निर्वाह कर सकनेवाली और हर तरहका श्रम और कष्ट सह सकनेवाली पत्नी शायद दूसरी नही हो सकती थी." [१]

जैनेंद्रजीके परिवारमें पत्नीके अतिरिक्त दो पुत्र रहे. दिलीपकुमार और प्रदीपकुमार. कुसुम, कुमुद और कनक ये इनकी तीन पुत्रियाँ है. जिनका विवाह पर्याप्त संतोष जनक रहा. उनकी माताजीका देहावसान सन-१९३५ में हुआ.

३) शिक्षा :-

जैनेंद्रजीकी शिक्षाका प्रारंभ "अलिफ", "बे" से हुआ. डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ लिखते हैं कि - " जैनेंद्र पढने लिखने में बहुत तेज तो नहीं पर शिथिल भी नहीं थे. तीसरी कक्षामें कम वयके छात्र होनेके कारण प्रथम होते हुये भी चतुर्थ कक्षामें प्रवेश उन्हें नहीं मिल सका था. बुध्दिकी प्रखरता उनमें थी. लेकिन लापरवाही उससे भी अधिक थी. वे झोंपू और शर्मीले भी थे." [२] सन १९११ से सन् १९१८ तक वे आश्रममें रहे. सन् १९१९ में उन्होंने मैट्रिक परीक्षा पास की. दो वर्षतक काशी विश्वविद्यालयमें अध्ययन करनेके उपरांत

---

१. जैनेंद्रकी कहानियाँ -एक मूल्यांकन-डॉ. शकुंतला शर्मा- - प्रथम संस्करण -१९७८ पृ.४३

२. जैनेंद्र उपन्यास और कला - डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ संस्करण -१९७८ - पृ. २-३

असहयोग आंदोलनके कारण अपने-आपको झाकझोर दिया. परिणाम स्वरूप सन्१९२४, १९३० और १९३२ में जेल की यात्रा करनी पडी.

४) जीवन संघर्ष :-

असहयोग आंदोलनसे प्रभावित होकर - जैनेंद्रकुमार राजनीतिके क्षेत्रमें रुचि लेने लगे. सन् १९३० में दिल्लीके विशाल जुलुसमें जब पुलिसकी लाठीकी मार उन्होंने खायी, तबसे उन्होंने राजनीतिमें भाग नहीं लिया. नौकरी जैनेंद्रजीने कभी नहीं की. वे अपने आपको चिरंतर बेकार समझाते हैं. उन्होंने फर्निचरकी साझेकी दूकान भी शुरू की थी; लेकिन उसमें वे असफल रहे. नौकरीके लिए वे बंबई,कलकत्ता तक यात्रा कर चुके हैं. " कभी कभी मानसिक तनावकी स्थितिमें जैनेंद्र जी आत्महत्याका विचार करते, लेकिन वृध्द मां का विचार आते ही वे अपनी दुरावस्थाको झेलते हुये जीवित रहे."[१] जीवनमें उन्होंने मर्यादाका पालन किया. निरंतर वे अध्ययनशील हैं. जैनेंद्र कम हँसते हैं. लेकिन जब हँसते हैं, तब गहराई और निश्छलतासे हँसते हैं. अपने लेखनकार्यकी शुरुआतको व्यक्त करते हुये वे बताते हैं- " लिखना पढना हुआ नहीं. इकलौतालडका था. न ही कहीं नौकरी मिली. इसीलिए २२-२३ वर्षमें लिखना आरंभ कर दिया."[२]

५) साहित्यिक विधाकी ओर :-

नौकरी पानेमें असफल रहनेपर जैनेंद्रजीने पुस्तकालयका आश्रय लिया. यथासंभव पुस्तकोंका सदुपयोग उन्होंने किया. इसीमें ही लिखनेकी प्रेरणा जागृत हुयी. श्रीमती- सुभद्राकुमारी चौहान,पंडित माखनलाल चतुर्वेदी आदि विव्दानोंसे उनकी भेंट हुयी. कहानियोंके प्रति वे पहलेसेही झुके हुये थे. आचार्य चतुरसेन शास्त्रीजीके " अंतस्थल "

१. जैनेंद्र - उपन्यास और कला. डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ संस्करण १९७८ पृ. ४
२. जैनेंद्रकी कहानियाँ - एक मूल्यांकन डॉ.शकुंतला शर्मा.प्रथम संस्करण-१९७८ पृ.४४

गद्यकाव्यसे प्रभावित होकर आपने सर्व प्रथम " देश जाग उठा " लिखा. " खेल " कहानी प्रकाशित होनेपर स्वर्गीय राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्तजीने आपके संबंधमें कहा था कि हमें हिंदीमें रविबाबू और शरत्बाबू अब मिले और एक साथ मिले. जैनेंद्र-कुमारकी लेखनी कहानी साहित्यकी सीमित परिधिमेंही उलझाती हुयी नहीं रही. सन्-१९२९ में आपका पहला उपन्यास "परख" सामने आया. युगीन परिस्थितियोंके परिप्रेक्ष्यमें वह अपने आपमें अनूठा था. आगे चलकर आपने अन्य अनुपम ग्यारह मनोवैज्ञानिक उपन्यासोंकी निर्मिती की. कहानी उपन्यास आदिके साथ संस्मरण, यात्रा, वैचारिक साहित्य आदि अन्य साहित्यिक विधाओंको भी सजाने और संवारनेका कार्य किया. समय-समयपर उनकी रचनाओं को पुरस्कार भी प्राप्त हुये. यामा (उपन्यास), पाप और प्रकाश, मंदालिनी (नाटक) आदि रचनाओंके अनुवाद भी आपने किये हैं.

श्री ऋषभचरण जैन ने सन् १९२९ में आपकी तीन कहानियोंका प्रकाशन " फाँसी " नामसे किया. जिसका प्रथम और संपूर्ण संस्करण काँग्रेसके अधिवेशनमें बिक गया. इससे ही जैनेंद्रकुमार अनेक क्रांतिकारियोंके ध्यानमें आये.

६. <u>विश्रांतिकाल</u> :

साहित्यिक जीवनकी दृष्टिसे जैनेंद्रकुमार का सन् १९३९ से सन् १९५२ तक का काल विश्रांतिकाल माना जायेगा. जैनेंद्रजीका, मानस अभी "धन " और " श्रम" पर ही विचार करने लगा था. पारिवारिक क्षेत्रमें "धन" का अभाव उन्हें हमेशा रहा है. जिससे आपका मानसिक अंतर्द्वंद्व निरंतर बढता रहा. बल्कि इस समय भी आपकी अध्ययन और मननशीलताकी धारणा बराबर रही.

आगे चलकर आपके साहित्यमें जो व्यापक अनुभूतिकी प्रामाणिकता प्राप्त होती है उसको संजोनेका कार्य जैनेंद्रजीने इसी समय किया था. सन् १९५१ में आपने पुत्रके सहयोगसे " पूर्वोदय प्रकाशन " की स्थापना की. आज जैनेंद्रजीका समूचा लेखन साहित्य " पूर्वोदय प्रकाशन " से प्रकाशित किया जाता है.

७) सफल वक्ता :

प्रारंभिक कालमें लेखनसे छुटकारा पानेपर जैनेंद्र निष्क्रिय नहीं रहे. विभिन्न सभाओंमें और गोष्ठियोंमें मौलिक विचारोंको अभिव्यक्त करनेके लिए आपको आमंत्रित किया गया. "विभिन्न स्थानोंपर विशाल सभाओंमें उन्होंने अपने मौलिक विचारोंको प्रगट किया और यह प्रमाणित किया कि वे हिंदीकी सीमाओंसे बंधे नहीं है. जैन समाजमें उनकी प्रतिष्ठाकी धाक जम गयी. और प्रतीत हुआ एक बार वे धार्मिक नेताका स्थान लेने लगे. उनके वक्ताकी मौलिकता और प्रखरता उनके सृजनमें भी परिलक्षित हुयी है. उनके विचारककी मौलिकता कभी कभी नैतिकताकी दृष्टीसे अवांछनीय मानी जाती है. लेकिन उनका चरित्र अत्यंत प्रखर, ऊँचा, अहंकारहीन एवं अति आत्मीय है."[१] आज भी विभिन्न सभाओं एवं साहित्यिक गोष्ठियोंमें आप अपने मौलिक विचारोंको व्यक्त कर रहे हैं.

साहित्यिक व्यक्तित्व

जैनेंद्रकुमारकी साहित्यिक अनुभूति गहरी है. जो उन्होंने कहा और लिखा है. वह स्पष्ट और व्यापक है. प्राणियोंकी प्राकृतिक दुर्बलताओंके लिए उनकी संवेदनामें आत्मीयता और सहानुभूति है. आप अपनी ही तरह सबके प्रति ईमानदार हैं. पारिवारिक घात-

१- जैनेंद्र - उपन्यास और कला - डॉ. विजय बुलबेचे
संस्करण १९७८ पृ. ५-६

प्रतिघातोंसे पीडित होनेपर भी जैनेंद्रजीने अपने भीतरी चैतन्यको हमेशा लोगोंके लिए न्योछावर किया है. अपनी लेखनकी मजबूरीके बारेमें बताते हुये वे अन्योंसे कहते हैं - " मुझमें न वक्तव्य है, न संदेश है, जैसे बोल लेता हूँ, वैसे ही लिख भी जाता हूँ."[२] वे धार्मिक कट्टरताके नहीं बल्कि उदारताके प्रतीक माने जाते हैं. आप धीमेसे बोलना आरंभ कर देते हैं. धीरे-धीरे उसमें ठोस रूप आ जाता है और बात समाप्त करते वक्त फिरसे वे धीमे बन जाते हैं. बातचीतमें कभी-कभार शिष्ट और दार्शनिक हो उठते हैं. मामा भगवानदीनके पास रहते वक्त गुरुकुल आश्रममें जो संस्कार उनके हृदयपर अंकित रहे उनका प्रभाव आपके साहित्यमें स्थान-स्थापर पाया जाता है. सादगीके साथ अहंवादिता भी आपके व्यक्तित्वमें समायी है.

जैनेंद्रकी जीवनदृष्टिकी गहरी छाप आपकी कृतियोंमें है. वैचारिक धरातलपरही जैनेंद्र विद्रोही नहीं रहे बल्कि क्रियात्मक रूपमें भी आप विद्रोही रहे हैं. युवावस्थामें आतंकवादी दलसे उनका संबंध आया था. उन आतंकवादी और रोमांचकारी घटनाओंने जैनेंद्रके व्यक्तित्वको उभारा और अलंकृत किया है. उनके संकल्प गहन और अनुभूति दृढ है. उनका सारा जीवन संघर्षमय होनेके कारण उनके कृतित्वके मूलमें भी आंतरिक संघर्ष ही परिलक्षित होता है. अहंकार और प्रेम, स्पर्धा और समर्पण का संघर्ष कृतियोंमें विवेचित करते हुये आपने अपनी विशिष्ट आस्तिकताको कलात्मक पध्दतिसे व्यक्त किया है.

जैनेंद्रका लेखकीय व्यक्तित्व सादगीसे परिपूर्ण, सहज और सामान्य है. उनमें कहींपर भी दिखावा या आडंबर नहीं है. उनके व्यक्तित्वके विषयमें श्री. रघुनाथशरण झालानी कहते हैं -तेजस्विता, प्रखरता तथा तीव्रता, गहनता, दृढता तथा व्यापकता इन छहों दृष्टियोंसे यदि हम अपने आलोच्य उपन्यासकारका विश्लेषण करें तो जैनेंद्रमें तेजस्विता,प्रखरता,गहनता और सूक्ष्मता - इन चार गुणोंकी स्थिति असंदिग्ध है. ..... जैनेंद्रकी कलामें दृढताकी स्थिति इसलिए संदिग्ध है कि जैनेंद्रकी निरीहता और नियतिवादके संघर्षमें यह बात कुछ अधिक जंचती नहीं है."[१] प्रेम और अहिंसाकी बातें कटूरतासे मेल नहीं खा सकती. अतः जैनेंद्रके विश्वास ढीले और कमजोर बन गये हैं. व्यापक जीवनकी परिधि उनके साहित्यमें अप्राप्य है.

---

१. जैनेंद्र उपन्यास और कला - डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ संस्करण १९७९ पृ.७